प्रकाशन तिथि : 01 जनवरी, 2024
प्रेषण तिथि : 04 जनवरी, 2024

'डाक पंजियन सं. जयपुर सिटी/247/2021-23
स.प.सं. 66332/97

पथ-प्रेरक

पाक्षिक

वर्ष 27 | अंक 20 | कुल पृष्ठ: 8 | एक प्रति: रुपए 7.00 | वार्षिक : रुपए 150/-

पूज्य तनसिंह जी की व्यथा और संकल्प का प्रकटीकरण है संघ : संघप्रमुख श्री

(देशभर में उत्साह से मनाया श्री क्षत्रिय युवक संघ का 78वां स्थापना दिवस)

यह बड़े हर्ष का विषय है कि आज श्री क्षत्रिय युवक संघ अपने 78वें वर्ष में प्रवेश कर रहा है। अनेकों माध्यम से हमने जाना कि श्री क्षत्रिय युवक संघ अपने प्रारंभिक काल से चलते हुए आज किस स्थिति में पहुंचा है। संघ अनेकों बार आप लोगों को बुलाता है, आप लोग दौड़-दौड़ कर आते हैं। यह संघ के प्रति आपका, समाज का प्रेम बोलता है। चाहे वह राजस्थान हो, गुजरात हो, महाराष्ट्र हो, जब भी आपको बुलाया जाता है, आप दौड़-दौड़ कर आते हैं। दो साल पहले राजस्थान में आपको बुलाया गया और आपने ऐसा उत्साह व जोश दिखाया जिसको शब्दों में व्यक्त करना कठिन है। लेकिन जहां बुलाएं, वहां आ जाएं और एक बहुत बड़ी भीड़ हम दिखा दें, इसके पीछे हेतु क्या है? इसके पीछे उद्देश्य क्या है, इस बात को जानना बहुत आवश्यक है। हम बार-बार आते रहें, बार-बार भीड़ जुटाते रहें, लेकिन इसके उद्देश्य को भूल जाएं तो यह सब व्यर्थ है। हेतु को समझने के लिए हम जानें कि पूज्य तनसिंह जी ने श्री क्षत्रिय युवक संघ की स्थापना क्यों की, इसके पीछे कारण क्या था? यदि इस कारण की खोज हम करेंगे तो हमको पता चलेगा कि वास्तव में पूज्य तनसिंह जी के हृदय में एक व्यथा थी जो श्री क्षत्रिय युवक संघ के रूप में प्रकट हुई। तनसिंह जी ने एक संकल्प किया और उस संकल्प के आधार पर श्री क्षत्रिय युवक संघ को तैयार किया। वह व्यथा, वह पीड़ा जो तनसिंह जी की थी, वह लाखों लोगों की व्यथा और पीड़ा बन गई। यही तन सिंह जी का स्वप्न था और यही स्वप्न हमारा होना चाहिए कि जिस पीड़ा को हमने हमारे हृदय में स्थापित किया है, वह पीड़ा प्रत्येक व्यक्ति की पीड़ा बन जाए। यही हमारा संकल्प होना चाहिए। लेकिन यह कैसे होगा? पीड़ा जागृत करना कोई आसान काम नहीं है। किसी दूसरे के प्रति पीड़ा, जिसको संवेदना कहा जाता है, वह किस प्रकार से प्रकट हो सकती है, किस प्रकार से हमारे भीतर उद्घाटित हो सकती है, उसी को समझाने के लिए श्री क्षत्रिय युवक संघ हमें बुलाता है। संघ में हमारे भीतर उस सात्विक भाव का निर्माण किया जाता है जो हमारे हृदय में समाज के प्रति उस व्यथा को जगा सके। उपर्युक्त बात माननीय संघप्रमुख श्री लक्ष्मण सिंह बैण्याकाबास ने गुजरात के अहमदाबाद में आयोजित संघ स्थापना दिवस समारोह को संबोधित करते हुए कही।

(शेष पृष्ठ 2 पर)

पूज्य तनसिंह जी के सामाजिक भाव से जन्मा संघ: सरवड़ी

(केंद्रीय कार्यालय संघशक्ति में मनाया स्थापना दिवस)

22 दिसंबर को श्री क्षत्रिय युवक संघ ने अपनी वर्तमान कार्य प्रणाली अपनाई, इसीलिए इसे स्थापना दिवस के रूप में हम मनाते हैं। लेकिन श्री क्षत्रिय युवक संघ का प्रारंभ तो सन् 1944 से ही हो गया था, जब तन सिंह जी पिलानी में पढ़ते थे। 1944 की दीपावली की रात थी जब उन्होंने देखा कि चारों तरफ रोशनी हो रही है, लोग खुशियां मना रहे हैं, पटाखे छोड़ रहे हैं लेकिन तनसिंह जी के मन में यह बात आई कि इस समय मेरे समाज की क्या स्थिति है? क्या आज मेरे समाज के लिए खुश होने की कोई स्थिति है? उनके हृदय में यह जो विचार पनपा, वही वास्तव में श्री क्षत्रिय युवक संघ का बीज बना। पूज्य तनसिंह जी में प्रारंभ से ही प्रबल सामाजिक भाव था। वे स्वयं आर्थिक कठिनाइयों से जूझते हुए भी अपने साथियों की सहायता करने का भाव रखते थे। इसके लिए उन्होंने पुस्तकालय में नौकरी की, छात्रावास के पास खाली पड़ी जमीन में सब्जियां उगाई, दर्जी की दुकान पर भी काम किया। इस प्रकार अपने साथियों के लिए और खुद के लिए कमाते थे। यही नहीं, उनको जो छात्रवृत्ति मिलती थी वह भी बिना बताए गुप्त दान के रूप में अपने एक साथी को दे दिया करते थे। पूज्य तनसिंह जी के इस सामाजिक भाव ने ही श्री क्षत्रिय युवक संघ का रूप लिया। पूज्य तनसिंह जी ने जाति की फुलवारी में पुष्प बनकर पूरे संसार में सौरभ फैलाने का संदेश दिया, अर्थात सच्चा क्षत्रिय बनकर सब की सेवा और रक्षा का कार्य करने का मार्ग बताया। क्षत्रिय सभी के लिए जीता है, सभी को क्षय से बचाता है और इस प्रकार की परंपरा को निर्मित करने के लिए और सच्चे क्षत्रिय का आचरण समाज में पैदा करने के लिए ही उन्होंने संघ की स्थापना की। उपर्युक्त बात श्री क्षत्रिय युवक संघ के वरिष्ठ स्वयंसेवक माननीय महावीर सिंह जी सरवड़ी ने 22 दिसंबर को श्री क्षत्रिय युवक संघ के जयपुर स्थित केंद्रीय कार्यालय संघशक्ति में आयोजित स्थापना दिवस कार्यक्रम को संबोधित करते हुए कही। उन्होंने कहा कि पूज्य तनसिंह जी के जन्म शताब्दी वर्ष में उनके संदेश को घर घर तक पहुंचाना है। इसके लिए हमें लगातार कार्य करते रहना है। मार्ग में आने वाले विरोध और आलोचनाओं की कोई परवाह नहीं करनी है। स्वयं तनसिंह जी का भी कई लोगों ने खूब विरोध किया लेकिन वे अपने कर्म में लगे रहे इसीलिए हम सब उन्हें महापुरुष के रूप में स्मरण कर रहे हैं। हमें भी उनसे प्रेरणा लेकर निरंतर कर्मरत रहना है। कार्यक्रम में जयपुर शहर में रहने वाले समाजबंधु मातृशक्ति सहित सम्मिलित हुए। संभाग प्रमुख राजेंद्र सिंह बोबासर सहयोगियों सहित उपस्थित रहे।

पूज्य तनसिंह जी की व्यथा और संकल्प का प्रकटीकरण है संघ : संघप्रमुख श्री

उंदरा (सिरोही)

उदयपुर

सिवाना

(पेज एक से लगातार)

उन्होंने कहा कि जो संस्था नियमितता और निरंतरता को बनाए रखती है वही लंबे समय तक प्रासंगिक बनी रह सकती है, काम कर सकती है। इससे भी अधिक महत्वपूर्ण है कि जिस संस्था, संगठन या व्यक्ति में त्याग का भाव जागृत होगा, वही संस्था, संगठन और व्यक्ति लम्बे काल तक प्रासंगिक बने रहेंगे। यह सौभाग्य की बात है कि आज के दिन गीता जयंती भी है। संघ गीता के आधार पर ही निर्मित हुआ है और गीता हमें उसी त्याग को सिखाती है। संपूर्ण गीता को यदि हम उठा कर देखें तो उसके अंदर त्याग ही सर्वोपरि है। इसीलिए संघ भी त्याग को सर्वाधिक महत्व देता है। गुजरात के मुख्यमंत्री माननीय भूपेंद्र भाई पटेल भी कार्यक्रम में शामिल हुए। उन्होंने कार्यक्रम को संबोधित करते हुए कहा कि जिस प्रकार का प्रवचन संघप्रमुख श्री ने दिया उसे सुन कर किसी का भी शौर्य जागृत हो जाएगा। नेतृत्वकर्त्ता को ऐसा ही होना चाहिए जो अपने पीछे चलने वालों में उत्साह जगा सके। उच्च आदर्शों को गढ़ने के लिए उच्च नेतृत्व होना आवश्यक है। उन्होंने कहा कि क्षात्रवृत्ति और चरित्र निर्माण द्वारा सामाजिक उच्चादर्शों की स्थापना के लिए पूज्य तनसिंह जी ने श्री क्षत्रिय युवक संघ की स्थापना की। हमारे देश की मूल भावना वसुधैव कुटुंबकम् की है और हमारे देश के वर्तमान प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी इसी भावना को लेकर चलने वाले हैं। श्री क्षत्रिय युवक संघ भी इसी भावना और सिद्धांत को लेकर चलने वाला संगठन है। श्री क्षत्रिय युवक संघ गीता में वर्णित क्षत्रियत्व के गुणों को युवाओं के चरित्र में उतारने के लिए निरंतर प्रयत्नशील है। यह संघ सदैव चलता रहे, ऐसी शुभकामना है। गुजरात सरकार के पूर्व कैबिनेट मंत्री भूपेंद्र सिंह चूड़ासमा ने विशाल संख्या में आए सभी समाजबंधुओं का अभिनंदन किया और कहा कि आज गीता जयंती भी है। हमारी जितनी भी समस्याएं हैं चाहे वे आर्थिक हो, सामाजिक हो, कौटुंबिक हों या राजनीतिक हों, उन सभी का समाधान गीता में है। पूज्य तनसिंह जी ने संघ की स्थापना भी गीता के सिद्धांतो पर ही की है। धोलेरा में आयोजित सात दिन के शिविर के दौरान मुझे भी तनसिंह जी के साथ रहने का अवसर मिला, उसके लिए मैं अपने को भाग्यशाली समझता हूं। उन्होंने हीरक जयंती की भव्यता और अनुशासन का स्मरण करते हुए जन्म शताब्दी समारोह को भी वैसा ही भव्य बनाने का आह्वान किया। गुजरात के पूर्व गृह राज्य मंत्री प्रदीप सिंह जाडेजा ने कहा कि समाज व्यवस्था में जो जो त्रुटियां हैं, उन्हें दूर करने का मार्ग पूज्य तनसिंह जी ने श्री क्षत्रिय युवक संघ के रूप में दिया। उनके संदेश को आत्मसात करते हुए हमें उनके दिखाए मार्ग पर चलना चाहिए। यदि हमें भी अपने पूर्वजों की तरह अपनी छवि जनमानस के हृदय में अंकित करनी है, उनकी अपेक्षाएं पूरी करनी है, तो इस प्रकार का प्रशिक्षण, जो संघ द्वारा दिया जा रहा है, समाज के लिए आवश्यक है। गुजरात कांग्रेस के कार्यकारी अध्यक्ष इंद्रविजय सिंह गोहिल ने कहा कि तनसिंह जी ने 77 वर्ष पूर्व जिस उद्देश्य से संघ की स्थापना की थी, उसी उद्देश्य को लेकर संघ निरंतर चल रहा है और समाज का मार्गदर्शन कर रहा है। भाजपा के पूर्व महामंत्री प्रदीप सिंह वाघेला ने कहा कि संघ से मेरा नाता विद्यार्थी काल से रहा है जब मैं धंधुका बोर्डिंग का छात्र था। संघ के शिविरों में जो संस्कार मुझे मिले, वे आज भी मेरा मार्गदर्शन करते हैं। वरिष्ठ स्वयंसेविका जागृति बा हरदासकाबास ने भी कार्यक्रम को संबोधित किया। दिग्विजय सिंह पलवाड़ा ने कार्यक्रम का संचालन किया। कार्यक्रम में मध्य गुजरात संभाग से बड़ी संख्या में समाजबंधु एवं मातृशक्ति की उपस्थिति रही। वरिष्ठ स्वयंसेवक अजीत सिंह धोलेरा का भी सान्निध्य रहा। इसके अतिरिक्त भी श्री क्षत्रिय युवक संघ का 78वां स्थापना दिवस देश भर में अनेक स्थानों पर उत्साह के साथ मनाया गया। सूरत शहर में 24 दिसंबर को माननीय संघप्रमुख श्री के सान्निध्य में स्थापना दिवस मनाया गया। कार्यक्रम को संबोधित करते हुए उन्होंने कहा कि श्री क्षत्रिय युवक संघ का स्थापना दिवस मनाने के उद्देश्य से इकट्ठे होकर आज हम एक स्थान पर एक साथ बैठकर अपने भीतर सामाजिक चेतना भरने का प्रयत्न कर रहे हैं। हम कुछ सोचने को विवश हो रहे हैं, एक साथ बैठकर अपनी थाती को, अपने इतिहास को याद करने का प्रयास कर रहे हैं। यही अवसर होते हैं जब हमारे रक्त की विशेषता, हमारे हृदय की अनुकूलता, हमारे कौम की तासीर को याद करने का अवसर प्राप्त होता है। सभी महापुरुषों का कहना है कि जो अवसर प्राप्त होता है उसका लाभ उठाना चाहिए। प्राप्त हुए अवसर को जो छोड़ देता है उसे पछताना पड़ता है। इस सूरत शहर में परमेश्वर की कृपा से हमें भी ऐसा अवसर प्राप्त हुआ है कि हम एक स्थान पर एक साथ बैठे हैं। चाहे यह संघ का स्थापना दिवस का बहाना हो चाहे अन्य कोई कार्यक्रम का बहाना हो, ऐसे अवसर का लाभ हमें अवश्य उठाना चाहिए। ऐसा तभी होगा जब हम अपने भीतर उस चिंतन को जगा सकें जो तनसिंह जी के हृदय में जगा था। उस पीड़ा का अनुभव कर सकें जो तनसिंह जी के हृदय में उत्पन्न हुई थी। तभी हम समाज के प्रति अपने दायित्व का पालन करने में लग सकेंगे। यही ऐसे कार्यक्रमों के आयोजन का उद्देश्य है। कार्यक्रम में साकेत आश्रम के महाराज जी का भी सान्निध्य रहा। कार्यक्रम को एपीएमसी चेयरमैन कोसम्बा दिलीप सिंह राठौड़, कच्छ काठियावाड़ राजपूत समाज अध्यक्ष प्रद्युमन सिंह जाड़ेजा, मदन सिंह अटोदरिया, डॉक्टर धीरेनसिंह महिडा, केतन सिंह चलथान, आईपीएस भागीरथ जी गढ़वी, राजस्थान राजपूत समाज के पूर्व अध्यक्ष विक्रम सिंह, राजस्थान राजपूत परिषद के अध्यक्ष महेंद्र सिंह ने भी संबोधित किया। इस दौरान बलदेवसिंह महिड़ा, कनकसिंह, पूर्व डिप्टी कमिश्नर प्रदीपसिंह झाला, महाराष्ट्र राजपूत समाज से शैलेंद्र सिंह, श्री माजीसा धाम ट्रस्ट अध्यक्ष पुखराजभाई जैन, पार्षद दिनेशभाई राजपुरोहित व पार्षद प्रतिनिधि नरपतसिंह चूंडावत, गायड़सिंह चूंडावत सहित कई गणमान्य लोग उपस्थित रहे। प्रांतप्रमुख खेत सिंह चादेसरा ने कार्यक्रम का संचालन किया। सूरत में 22 दिसंबर को भी सामूहिक शाखा का आयोजन करके स्थापना दिवस मनाया गया जिसमें प्रांत प्रमुख खेत सिंह चादेसरा सहयोगियों सहित उपस्थित रहे। 22 दिसंबर को दिल्ली विश्वविद्यालय में भी संघ का स्थापना दिवस मनाया गया जिसमें विश्विद्यालय के छात्र और अन्य युवा शामिल हुए। दिल्ली के शास्त्री नगर में भी कार्यक्रम आयोजित हुआ। दोनों कार्यक्रमों में केंद्रीय कार्यकारी रेवंत सिंह पाटोदा सहयोगियों के साथ उपस्थित रहे और पूज्य श्री तनसिंह जन्म शताब्दी समारोह में शामिल होने का निमंत्रण उपस्थित समाजबंधुओं को दिया। राजकुमार सिंह भदौरिया, सुप्रीम कोर्ट के अधिवक्ता एपी सिंह सहित अनेकों समाजबंधु कार्यक्रम में उपस्थित रहे। चित्तौड़गढ़ प्रांत में खेडिया, सहाड़ा में स्थापना दिवस मनाया गया जिसमें केंद्रीय कार्यकारी प्रेम सिंह रणधा ने कहा कि हम हमारी अमृत रूपी संस्कृति का रक्षण करें, यही शिक्षण संघ दे रहा है। इसी के लिए संघ शाखाओं, शिविरों, जयंती आदि का आयोजन करता है। मीना कंवर चाकुड़ा ने संघ द्वारा बालिकाओं में किए जा रहे कार्यों की जानकारी दी। आलोक आश्रम बाड़मेर में स्थापना दिवस पर भजन संध्या का आयोजन हुआ। पूज्य श्री तनसिंह जी की जन्म स्थली बैरसियाला में भी स्थापना दिवस मनाया गया।

(शेष पृष्ठ 7 पर)

सहाड़ा

डूंगरपुर

शास्त्रीनगर (दिल्ली)

पूज्य श्री की जन्मस्थली बेरसियाला से हुआ संदेश यात्रा का शुभारंभ

देलदर (सिरोही)

28 जनवरी को दिल्ली के जवाहर लाल नेहरू स्टेडियम में आयोजित होने वाले पूज्य श्री तनसिंह जी जन्म शताब्दी समारोह के निमित्त पूज्य श्री के जन्म स्थान बेरसियाला (जैसलमेर) से दिल्ली तक संदेश यात्रा के रूप में वाहन रैली का आयोजन किया जा रहा है। दो चरणों में होने वाली इस सन्देश यात्रा के प्रथम चरण का शुभारंभ 22 दिसंबर को संघ स्थापना दिवस पर हुआ जब बेरसियाला स्थित पूज्य तनसिंह जी की प्रतिमा की अर्चना के साथ यात्रा का आगाज किया गया। गांव की बालिकाओं द्वारा संदेश यात्रा रथ का तिलक लगाकर स्वागत किया गया और ग्रामवासियों द्वारा यात्रा में शामिल वाहनों और स्वयंसेवकों पर पुष्प वर्षा की गई। संदेश यात्रा रथ के साथ दर्जनों वाहनों का काफिला बेरसियाला से रवाना होकर जैसलमेर के विभिन्न गाँवों से गुजरते हुए शाम को आलोक आश्रम, बाड़मेर पहुंचा जहां माननीय संरक्षक श्री भगवान सिंह जी रोलसाहबसर द्वारा यात्रा रथ का स्वागत किया गया एवं यात्रा पर निकले स्वयंसेवकों को आशीर्वाद प्रदान किया गया। इससे पूर्व यात्रा खुहड़ी, धोबा, जानरा, चेलक, देवड़ा, जोगीदास का गांव, गुमान सिंह की ढाणी, झिनझिनयाली, कुंडा, मुंगेरिया, बालासर, शिव, कोटड़ा, सुरा, बिशाला, भादरेश, चूली, हापो की ढाणी, दान जी की होदी आदि गाँवों से गुजरी जहां विभिन्न स्थानों पर समाजबंधुओं द्वारा पुष्पवर्षा आदि के द्वारा यात्रा का स्वागत किया गया। सम प्रधान तनसिंह सोढ़ा, फतेहगढ़ प्रधान जनक सिंह तेजमालता के अलावा श्री क्षत्रिय युवक संघ के केंद्रीय कार्यकारी कृष्ण सिंह रानीगांव, बाड़मेर संभाग प्रमुख महिपाल सिंह चूली, जैसलमेर संभाग प्रमुख तारेन्द्र सिंह झिनझिनयाली, वरिष्ठ स्वयंसेवक बाबू सिंह, हरि सिंह

बेरसियाला

बैरसियाला, गंगा सिंह तेजमालता, सांवल सिंह मोढ़ा सहित अनेकों स्वयंसेवक व समाजबंधु यात्रा में शामिल हुए। दूसरे दिन 23 दिसंबर को यात्रा का काफिला सुबह 8:30 बजे आलोक आश्रम बाड़मेर से रवाना होकर बाड़मेर शहर पहुंचा। यहां स्थानीय विधायक प्रियंका चौधरी सहित शहर वासियों ने यात्रा का स्वागत किया। यहां से यात्रा कुडला, भुरटिया, चवा, सरणु आदि गांवों से होते हुए बालोतरा के सणपा गांव में पहुंची। बालोतरा संभाग में पहुंचने पर संभाग प्रमुख मूल सिंह काठाडी, बालोतरा प्रान्त प्रमुख चंदन सिंह थोब, बायतु प्रान्त प्रमुख मूल सिंह चादेसरा, सिवाना प्रान्त प्रमुख मनोहर सिंह ने

बाड़मेर

शिवगंज

सैकड़ो सहयोगियों और समाजबंधुओ के साथ मिलकर यात्रा का स्वागत किया। सणपा से यात्रा डंडाली फांटा, सिणधरी बाजार, मल्लीनाथ हॉस्टल सिणधरी, भूंका भगत सिंह, कालूड़ी, टापरा, असाड़ा, हाउसिंग बोर्ड बालोतरा, मूठली, थापन, भीमगोडा (कुसीप), गुरूमन्छ छात्रावास सिवाना, सिवाना बाजार, कल्ला रायमलोत छात्रावास सिवाना, मवड़ी, मोकलसर, रमणिया होते हुए काठाड़ी पहुंची। यहां से यात्रा ने जालौर संभाग में प्रवेश किया और नरसाना, बिशनगढ़ होते हुए जालौर शहर स्थित वीरामदेव राजपूत छात्रावास पहुंची। इस दौरान स्थान-स्थान पर ग्रामीणों द्वारा उत्साह के साथ पुष्प वर्षा द्वारा यात्रा का स्वागत किया गया। जालौर संभाग प्रमुख अर्जुन सिंह देलदरी ने सहयोगियों के साथ मिलकर जालौर जिले में प्रवेश पर यात्रा का स्वागत किया। यात्रा के तीसरे दिन 24

समरथपुरा

दिसंबर को यात्रा की सुबह 8:30 बजे जालौर शहर से रवानगी हुई। बागरा, आकोली, सियाणा, काणदर, रायपुरिया, सिवणा, देलदर, बरलूट और जावाल होते हुए 12 बजे सिरोही पहुंची जहां राव सुरताण शिक्षण संस्थान में एक बैठक का आयोजन हुआ। यहां से पालडी, उथमण, पंचदेवल, चूली, गोडाना, वेरा जेतपुरा होते हुए शिवगंज पहुंची। यहां विधायक ओटाराम देवासी द्वारा शहरवासियों के साथ मिलकर यात्रा दल का स्वागत किया गया। यहां से यात्रा पाली जिले में प्रवेश कर सुमेरपुर पहुंची जहां विधायक जोराराम कुमावत ने क्षेत्रवासियों के साथ मिलकर यात्रा का स्वागत किया। यहां से कोलीवाड़ा, जाखोड़ा, खिंदारागांव और फालना होते हुए बाली पहुंची जहां यात्रा दल द्वारा रात्रि विश्राम किया गया। यात्रा के चौथे दिन 25 दिसंबर की सुबह जन्म शताब्दी संदेश यात्रा बाली से रवाना हुई और मुंडारा, सादड़ी, घाणेराव, देसूरी होते हुए राजसमंद के झीलवाड़ा पहुंची। देसूरी में खुशवीर सिंह जोजावर ने सर्व समाज के लोगों के साथ मिलकर यात्रा का स्वागत किया। यहां से मेवाड़िया चौराहा, नीमडी चौराहा, गोमती चौराहा, मांडावाडा टोल नाका होते हुए यात्रा राजसमंद शहर पहुंची। यहां कुंभलगढ़ विधायक सुरेंद्र सिंह राठौड़ द्वारा यात्रा दल का स्वागत किया गया। इसके पश्चात पीपरडा, करजीया घाटी, गुंजोल होते हुए यात्रा नाथद्वारा स्थित क्षत्रिय सभा भवन में पहुंची जहां एक सभा का आयोजन हुआ तथा यात्रा दल के लिए भोजन की व्यवस्था की गई। यहां से नाथद्वारा बस स्टैंड, राबचा, घोड़ा घाटी, नेगडिया टोल,

राजसमंद

सुमेरपुर

देलवाड़ा, बरवा चौराहा, झालों का गुड़ा, अंबेरी होते हुए उदयपुर पहुंची जहां पूर्व विधायक रणधीर सिंह भिंडर एवं प्रीति शक्तावत ने शहरवासियों के साथ मिलकर यात्रा का स्वागत किया। सौभागपुरा चौराहा, 100 फीट रोड, लेक सिटी मॉल, दुर्गा नर्सरी रोड, भट्टा चौराहा होते हुए यात्रा भूपाल नोबल्स संस्थान पहुंची जहां एक बैठक आयोजित की गई जिसमें उदयपुर शहर में रहने वाले समाजबंधु मातृशक्ति सहित उपस्थित रहे। कार्यक्रम को वरिष्ठ स्वयंसेवक भवानी सिंह मुंगेरिया, महेंद्र सिंह तारातरा, लक्ष्मी कंवर, दिग्विजय सिंह तलावदा, महेंद्र सिंह आगरिया, दरियाव सिंह चुंडावत, रणधीर सिंह भींडर आदि ने संबोधित किया। दलपत सिंह गुड़ा केसरसिंह ने कार्यक्रम का संचालन किया। 26 दिसंबर को बीएन विश्वविद्यालय में सामूहिक यज्ञ के पश्चात यात्रा उदयपुर के सेवाश्रम चौराहे से प्रारंभ हुई तथा नाकोड़ा नगर, देबारी, डबोक चौराहा, देवाली, शोभ जी का खेड़ा, वागरोदा, मावली, फतेह नगर, भोपाल सागर, कपासन, सिंहपुर टोल, नारेला, डगला का खेड़ा होते हुए चित्तौड़गढ़ पहुंची। यहां महाराणा भूपाल राजपूत छात्रावास में स्थानीय विधायक चंद्रभान सिंह आक्या, भदेसर प्रधान सुशीला कंवर आक्या, गंगरार के पूर्व प्रधान शक्ति सिंह मुरलिया सहित अनेक गणमान्य व्यक्तियों एवं समाजबंधुओ ने यात्रा का स्वागत किया। विधायक आक्या ने सभी से पूज्य तनसिंह जी के जीवन से प्रेरणा लेने और अधिकतम संख्या में दिल्ली पहुंचने की बात कही। चित्तौड़ से रवाना होकर यात्रा आंवलहेड़ा चौराहा, बस्सी, गोपालपुरा, राजगढ़, हरिपुरा, मोतीपुरा, बड़ा खेड़ा, बडलियास, चांदगढ़, सवाईपुर, अगरपुरा, सुवाणा, ईरास होते हुए भीलवाड़ा पहुंची। यात्रा का काफिला छठे

नागोला

दिन 27 दिसंबर को सुबह सवा आठ बजे भीलवाड़ा के महाराणा प्रताप चौराहे पर स्थित महाराणा प्रताप की प्रतिमा पर पुष्पांजलि अर्पित कर आगे के लिए रवाना हुआ और गुरला, मेघराज चौराहा, गंगापुर, कोशीथल होते हुए रायपुर पहुंचा। रायपुर में सहाड़ा विधायक लादूलाल पितलिया सहित सर्वसमाज के लोगो ने तिलक एवं पुष्प वर्षा कर यात्रा दल का स्वागत किया। यहां से आगे करेड़ा, बेमाली चौराहा, दहिमथा, तिलोली, दौलतगढ़ होते हुए यात्रा आसींद पहुंची जहां विधायक जब्बर सिंह सांखला सहित स्थानीय लोगों ने यात्रा का स्वागत किया। (शेष पृष्ठ 7 पर)

सवाई माधोपुर

संपादकीय

कर्म का परिणाम नहीं भाव है महत्त्वपूर्ण

सामान्यतः हमारी दृष्टि स्थूल पर ही ठहरती है। कोई व्यक्ति हो, घटना हो, वस्तु हो, उसके स्थूल स्वरूप को ही हम देखते हैं और उसके आधार पर उसका मूल्यांकन भी करते हैं। किसी कार्य के औचित्य या अनौचित्य को भी अधिकांशतया उसके स्थूल और बाह्य परिणाम से ही हम तौलते हैं। इन परिणामों के आधार पर ही हम अपने भविष्य के क्रिया-कलाप, योजनाएं आदि निर्धारित करते हैं। लेकिन इस पूरी प्रक्रिया में जीवन का जो सुक्ष्म और मूल तत्व है, वह उपेक्षित हो जाता है। वह तत्व है किसी कार्य को करने के मूल में उपस्थित भाव। इस भाव को महत्व न देकर जब कार्य के स्थूल स्वरुप और परिणाम को ही महत्व दिया जाता है तो व्यक्ति परिणामवादी बन जाता है। यहां प्रश्न उठ सकता है कि क्या परिणामवादी होना बुरा है। परिणाम के लिए ही तो सभी कार्य किए जाते हैं तो परिणामवादी होने में क्या बुराई है? लेकिन यदि इस पर गहराई से चिंतन करें तो पाएंगे कि परिणामवादिता वास्तव में व्यक्ति के अहंकार की द्योतक है। इसी अहंकार का शिकार होकर व्यक्ति किसी भी निर्णय को उसके परिणाम से आंकता है और ऐसी निर्णय प्रक्रिया को अपनाने की बात करता है जिससे निश्चित परिणाम आ सके। यह वास्तव में जीवन को अपनी अधूरी बौद्धिक मान्यताओं और धारणाओं में बांधने की ही चेष्टा है, लेकिन जीवन इतनी व्यापक घटना है कि हमारी व्यक्तिगत मान्यताएं, धारणाएं, बुद्धि, तर्क आदि उसे बांध नहीं सकते। यदि ऐसा करना संभव होता तो मनुष्य कब का वांछित परिणाम के लिए उपयुक्त निर्णय लेने की एक निश्चित प्रक्रिया विकसित कर जीवन को यांत्रिक और जड़ बना चुका होता। यह सौभाग्य ही है कि जीवन या प्रकृति या ईश्वर, चाहे हम उसे जो भी नाम दें, की अप्रत्याशितता और व्यापकता को मनुष्य बांध नहीं पाता और न ही उसके पास परिणामों को इच्छानुसार घटित करने की शक्ति है अन्यथा व्यक्ति बड़ा और जीवन छोटा हो गया होता। लेकिन दुर्भाग्य यह है कि मनुष्य अहंकार के वश हो इस बात को स्वीकार नहीं करता कि जीवन उससे बहुत बड़ा है और इसीलिए जीवन के सार सूत्रों को समझने और स्वयं को उनके अनुकूल बनाने की अपेक्षा वह जीवन पर कब्जा करने और उसे अपनी बुद्धि और तर्क के निश्चित सांचे में ढालने का असफल प्रयास करने का व्यर्थ श्रम करता है।

यदि हम देखने का प्रयत्न करें तो सौभाग्य और दुर्भाग्य की इस यात्रा के पदचिह्न हमें अपने जीवन में भी हर मोड़ पर दिखाई पड़ेंगे। हम सभी सदैव तात्कालिक रूप से उपलब्ध समस्त सूचनाओं, विश्वासों, अनुभवों और साधनों के अनुसार उस समय संभव श्रेष्ठतम निर्णय लेते हैं लेकिन उन सभी निर्णयों का परिणाम क्या सदैव हमने जैसा सोचा वैसा ही आता है? चाहे हमारे द्वारा धन संपत्ति जुटाने के प्रयत्न हों, या अपनी संतान के व्यक्तित्व को इच्छित दिशा देने के प्रयत्न हों, या अपने स्वास्थ्य, पारिवारिक परिस्थितियों आदि को अपनी इच्छानुसार बनाने के प्रयास हों, पद या सत्ता प्राप्ति के लिए प्रयत्न हों या इसी प्रकार के हमारे जीवन के अन्य छोटे-बड़े आयाम हों जिन्हें इच्छानुसार नियंत्रित करने के लिए हम विभिन्न निर्णय लेते हैं लेकिन उनके परिणामों को देखें तो हम पाएंगे कि उन परिणामों में हमारे प्रयत्नों की अपेक्षा जीवन जो संयोग घटित करता है, उनका ही योगदान अधिक होता है।

तब क्या उपरोक्त विमर्श का अर्थ यह है कि मनुष्य के हाथ में कुछ भी नहीं है और सब कुछ भाग्यानुसार ही घटित होगा अतः जीवन को इच्छित दिशा देने के लिए प्रयत्न करने में कोई अर्थ नहीं है? नहीं, इस विमर्श का उद्देश्य यह नहीं कि हम भाग्यवादी बनकर निष्क्रियता को अपना लें, बल्कि इस विमर्श का अभिप्राय यह है कि हमें किसी भी कार्य के औचित्य और अनौचित्य को उसके स्थूल परिणाम से तौलने की भूल से बचना होगा। हमें यह समझना होगा कि जीवन हमारे कार्यों का मूल्यांकन उनके परिणामों से नहीं बल्कि उन कार्यों को करते समय के हमारे भावों के आधार पर करता है। पूज्य तनसिंह जी ने संयोगों को ईश्वर की भाषा बताया है। जो ईश्वरीय शक्ति इन संयोगों को घटित करती है, उस तक पहुंच का साधन हमारे पास केवल भाव ही है। भगवान तो भाव के भूखे हैं, जैसी लोकोक्तियां भी इसी सत्य को प्रतिध्वनित करती आई हैं। इसीलिए किसी कार्य को करते समय हमारे भाव ही महत्त्वपूर्ण है क्योंकि ये भाव ही कर्मफल या परिणामों को देने वाली शक्ति तक पहुंचते हैं और उन भावों के अनुरूप ही वह शक्ति संयोगों का सृजन करती है। गीता में भगवान श्रीकृष्ण द्वारा कर्मफल की चिंता किए बिना कर्मरत रहने की जो बात कही गई है, वह भी इसी दृष्टिकोण को पुष्ट करती है। यह दृष्टिकोण हमारे जीवन के प्रत्येक अंग में अपनाया जाना चाहिए जिससे हम जीवन, प्रकृति या ईश्वरीय शक्ति के अनुकूल हो सकें और उसकी कृपा को प्राप्त कर सकें, परंतु समाज जागरण जैसे कार्य में तो यह दृष्टिकोण होना परम आवश्यक है। जब भी समाज जागरण या समाज सेवा के कार्य का उसके स्थूल परिणामों से आकलन किया जाने लगता है तो उस कार्य में सात्विकता, श्रद्धा और स्नेह जैसे तत्वों के स्थान पर अहंकार, पाखंड और नकारात्मकता जैसे तत्व प्रवेश कर जाते हैं। व्यक्ति की तुलना में समाज बहुत बड़ी शक्ति है और जनमानस की भावतरंग ईश्वरीय संयोगों से ही प्रवाहित होती है। इसीलिए सात्विकता, श्रद्धा और स्नेह जैसे भावों के बिना इस भावतरंग को न प्रभावित किया जा सकता और न ही उसे अपने अनुकूल होने के लिए प्रेरित किया जा सकता है। इसीलिए जिनको वास्तव में समाज जागरण का कार्य करना है, उन्हें स्थूल परिणामों के अवलोकन से पहले अपने भावों का मूल्यांकन करना आवश्यक है।

श्री क्षत्रिय युवक संघ में इसीलिए हमारे भाव को सर्वाधिक महत्त्व दिया जाता है। संघ की प्रणाली निश्चित रूप से कर्म प्रधान है लेकिन उस कर्म के बाह्य स्वरूप या उसके परिणाम की अपेक्षा वह कर्म जिस भाव से किया जाता है वही महत्त्वपूर्ण है। समय की कसौटी पर कोई भी निर्णय गलत सिद्ध हो सकता है, श्रेष्ठतम प्रयासों के भी विपरीत परिणाम निकल सकते हैं, दृढ़ विश्वासों के आधार भी कमजोर निकल सकते हैं, पर उन सबके पीछे जो भाव है, वह कभी निष्फल नहीं हो सकता। वह भाव ही ईश्वरीय संयोगों के घटित होने के लिए भूमिका बनता है और वही अंततः बुद्धि द्वारा अनपेक्षित परिणामों का सृजन कर जीवन के विकास चक्र में हमें नियोजित करता है। सांघिक संगठन का आधार भी सहयोगियों के भावपूर्ण संबंध ही है और इसी से संगठन अटूट बनता है। बौद्धिक संबंध तो कार्यों के बाह्य परिणाम और परिस्थितिजन्य निर्णयों के सही या गलत सिद्ध होने पर ही निर्भर किया करते हैं और इसीलिए ऐसे संबंध जरा सा उतार-चढ़ाव आते ही बिखर जाते हैं। ऐसे अस्थिर संबंधों के आधार पर सांगठनिक शक्ति का निर्माण करने का प्रयास केवल दिवास्वप्न ही होगा। इसीलिए श्री क्षत्रिय युवक संघ में संगठन का आधारभूत तत्व भावना है और जिसके भीतर भावधारा जागृत हो वही संघ को उसके सही अर्थों में समझ सकता है। पूज्य तनसिंह जी ने लिखा भी है कि ₹भावना कोई ऊपरी लिबास नहीं, यह वह स्थान है, जहां आत्मा अंकुरित ही नहीं पल्लवित और पुष्पित होती है। जब वह प्रगट होती है, तो उसके सहारे मानव में ईश्वर की अभिव्यक्ति आकार धारण करती है।₹ इसलिए आएं, हम भी संघ के रूप में प्रवाहित पूज्य श्री की भावधारा के साथ जुड़कर अपने भावों को उत्तरोत्तर शुद्ध और प्रबल बनाएं।

आयुवान निकेतन में जन्म शताब्दी समारोह का पोस्टर विमोचन

17 दिसंबर को साधना संगम संस्थान के तत्वावधान में कुचामन स्थित संभागीय कार्यालय आयुवान निकेतन में पूज्य श्री तनसिंह जी जन्म शताब्दी समारोह के पोस्टर का विमोचन किया गया। श्री क्षत्रिय युवक संघ के वरिष्ठ स्वयंसेवक दीप सिंह बैण्याकाबास ने कार्यक्रम को संबोधित करते हुए कहा कि पूज्य तनसिंह जी हम सभी के आदर्श और प्रेरणास्रोत हैं जिन्होंने अपना संपूर्ण जीवन समाज और मानवता के कल्याण के लिए जीया। उनके प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करने का अवसर जन्म शताब्दी समारोह के रूप में हम सबके सामने आया है जिसमें हम सभी को अवश्य सहभागी बनना चाहिए। संभाग प्रमुख शिंभू सिंह आसरवा ने जन्म शताब्दी समारोह के निमित्त संभाग में हो रही तैयारी के संबंध में जानकारी दी। जितेंद्र सिंह जोधा ने कहा कि सौभाग्य से हमको ऐसे ऐतिहासिक क्षण का साक्षी होने का अवसर मिल रहा है, अतः अधिक से अधिक संख्या में हम सभी को दिल्ली पहुंचना है। धनंजय सिंह खींवसर ने सभी को साथ लेकर चलने की सनातन क्षत्रिय परंपरा के निर्वहन के लिए पूज्य तनसिंह जी के बताए मार्ग पर चलने की बात कही। बीरमदेव सिंह जैसास, श्याम प्रताप सिंह रूवां, भगवत सिंह रसाल आदि ने भी अपने विचार रखे। कार्यक्रम का संचालन जय सिंह सागु बड़ी ने किया। 20 दिसंबर को लाडनूं प्रांत के बरड़वा गांव में स्थित श्री राजपूत सभा भवन में एवं 21 दिसंबर को ओडिंट व हीरावती गांव में भी शताब्दी समारोह का पोस्टर विमोचन कार्यक्रम आयोजित किया गया जिसमें प्रांत प्रमुख विक्रम सिंह ढींगसरी सहयोगियों सहित उपस्थित रहे।

अखंड राजपुताना युवा संघ मुंबई का 8वां स्थापना दिवस मनाया

अखंड राजपुताना युवा संघ मुंबई का 8वां स्थापना दिवस समारोह अहमदाबाद में 16 दिसंबर को आयोजित हुआ। संस्था के आर पी सिंह राष्ट्रीय अध्यक्ष, अश्विनसिंह सरवैया (प्रदेश संयोजक गुजरात), कनकसिंह राणा भेसजाड, किशोरसिंह झाला सदाद सहित अनेकों गणमान्य समाजबंधु कार्यक्रम में उपस्थित रहे। सभी वक्ताओं ने सामाजिक भाव के निर्माण में सहयोग देने की बात कही। श्री क्षत्रिय युवक संघ के केंद्रीय कार्यकारी महेंद्र सिंह पांची सहयोगियों सहित कार्यक्रम में उपस्थित रहे। उन्होंने पूज्य श्री

तनसिंह जी जन्म शताब्दी वर्ष एवं अहमदाबाद में आयोजित होने वाले संघ स्थापना दिवस के बारे में जानकारी दी एवं सभी से अधिकतम संख्या में दिल्ली पहुंचने का निवेदन किया। कार्यक्रम के दौरान जन्म शताब्दी संदेश यात्रा का पोस्टर विमोचन भी किया गया।

सागुबड़ी में मनाई राव कुंपाजी की 521वीं जयंती

पूज्य श्री तनसिंह जी के जन्म शताब्दी वर्ष के निमित्त राव कुंपाजी की 521वीं जयंती कार्यक्रम का आयोजन नागौर के सागुबड़ी गांव में 26 दिसंबर को किया गया। कार्यक्रम का प्रारंभ गजराज सिंह चौमूं और केशर सिंह सागुबड़ी ने कुम्पा जी की तस्वीर के आगे दीप प्रज्वलित करके किया। श्री क्षत्रिय युवक संघ के स्वयंसेवक जयसिंह सागु ने जयंती कार्यक्रम की भूमिका बताते हुए सभी को जन्म शताब्दी समारोह का निमंत्रण दिया। मनराज सिंह चौमूं ने राव कुंपाजी के इतिहास पर विस्तृत प्रकाश डाला। कार्यक्रम को केशर सिंह सागु, राजपूत सभा डीडवाना के

अध्यक्ष रूघवीर सिंह चौमूं, प्रेमसिंह सागु, शिवराज सिंह सागु ने भी संबोधित किया। कार्यक्रम में भारत सिंह, देवी सिंह, भवानी सिंह, दिलराज सिंह, छीतरसिंह, दौलत सिंह, भंवर सिंह, गोविंद सिंह, मनोहर सिंह, दियाल सिंह सहित अनेकों समाजबंधु उपस्थित रहे।

दिव्याकृति सिंह और ऐश्वर्य प्रताप सिंह तोमर को अर्जुन पुरस्कार की घोषणा

नागौर के पीह गांव की निवासी और ख्यातिनाम अंतर्राष्ट्रीय महिला घुड़सवार दिव्याकृति सिंह को अर्जुन पुरस्कार के लिए चुना गया है। भारत सरकार के युवा मामले एवं खेल मंत्रालय द्वारा 20 दिसंबर को इन पुरस्कारों की घोषणा की गई। घुड़सवारी की इक्वेस्ट्रियन शैली की खिलाड़ी इस वर्ष अर्जुन पुरस्कार के लिए चयनित राजस्थान की एकमात्र खिलाड़ी है। वे दो महीने पहले एशियाई खेलों में स्वर्ण पदक भी जीत चुकी है। दिव्याकृति

क्षत्रिय युवक संघ के वरिष्ठ स्वयंसेवक कर्नल हिम्मत सिंह की पौत्री है। मध्यप्रदेश के खरगोन जिले के रतनपुर गांव के निवासी शूटिंग (निशानेबाजी) के खिलाड़ी ऐश्वर्य प्रताप सिंह तोमर को भी अर्जुन पुरस्कार के लिए चुना गया है। ऐश्वर्य प्रताप ने हांगझोऊ एशियाई खेलों में दो स्वर्ण और एक रजत पदक जीता था। इन खिलाड़ियों को राष्ट्रपति भवन में 9 जनवरी को आयोजित होने वाले समारोह में राष्ट्रपति महोदया द्रौपदी मुर्मू द्वारा यह सम्मान प्रदान किया जाएगा।

IAS/ RAS
तैयारी करने का राजस्थान का सर्वश्रेष्ठ संस्थान
स्प्रिंग बोर्ड
Spring Board
Springboard Academy, Main Riddi Siddi choraha, Opposite Bank of Baroda, Gopalpura bypass Jaipur
website : www.springboardindia.org

सरिता राठौड़ भारत की 20 सशक्त महिलाओं में शामिल

फेम इंडिया एशिया पोस्ट के सर्वे में जयपुर निवासी सरिता राठौड़ को 2023 में देश की 20 सशक्त महिलाओं में शामिल किया गया है। इस सूची में वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण, नीता अंबानी, स्मृति ईरानी, अंजू बॉबी जार्ज जैसी महिलाएं शामिल है। सरिता राठौड़ को उनके द्वारा लेखन एवं सामाजिक क्षेत्र में

किए गए सराहनीय कार्य के लिए इस सूची में शामिल किया गया है। वे इससे पूर्व भी अखिल भारतीय क्षत्रिय महासभा द्वारा क्षत्रिय रत्न एवं गैर सरकारी संगठनों के अंतरराष्ट्रीय परिसंघ द्वारा कर्मवीर चक्र प्रमाण पत्र सहित अनेक राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय संस्थाओं द्वारा सम्मानित हो चुकी हैं।

पूनम कंवर झिनझिनयाली का गणतंत्र दिवस शिविर के लिए चयन

बाड़मेर के एमबीसी राजकीय कन्या महाविद्यालय की राष्ट्रीय सेवा योजना की स्वयंसेविका पूनमकंवर भाटी पुत्री शंभू सिंह का चयन नई दिल्ली में आयोजित होने वाले गणतंत्र दिवस शिविर के लिए किया गया है। उन्हें राष्ट्रपति व प्रधानमंत्री आवास पर होने वाली राष्ट्रीय परेड व सांस्कृतिक कार्यक्रमों में भाग लेने का अवसर मिलेगा। पूनम भाटी ने मनोहर मेमोरियल स्नातकोत्तर महाविद्यालय मॉडल टाउन, फतेहाबाद (हरियाणा) में

हाल में आयोजित नॉर्थ जोन प्री रिपब्लिक डे कैंप में भाग लेकर अपनी प्रतिभा और सांस्कृतिक कौशल का परिचय दिया था जिसके आधार पर उनका चयन गणतंत्र दिवस शिविर में जाने वाली एनएसएस की 10 स्वयंसेविकाओं में हुआ है। जैसलमेर जिले के झिनझिनयाली गांव की निवासी पूनम ने श्री क्षत्रिय युवक संघ के शिविर कर रखे हैं एवं वर्तमान में बीए तृतीय वर्ष में अध्ययनरत हैं।

अलख नयन
आई हॉस्पिटल
Super Specialized Eye Care Institute
विश्वस्तरीय सम्पूर्ण नेत्र चिकित्सा सेवाएं
मोतियाबिन्द | कॉर्निया | नेत्र प्रत्यारोपण
कालापानी | रेटिना | बच्चों के नेत्र रोग
डायबिटीक रेटिनोपैथी | ऑक्यूलोप्लास्टि
'अलख हिल्स', प्रताप नगर ऐक्सटेंशन, एयरपोर्ट रोड, उदयपुर
0294-2490970, 71, 72, 9772204624
e-mail : info@alakhnayanmandir.org, Website : www.alakhnayanmandir.org

आसपुर में सात दिवसीय मातृशक्ति प्रशिक्षण शिविर संपन्न

श्री क्षत्रिय युवक संघ का सात दिवसीय मातृशक्ति प्रशिक्षण शिविर डूंगरपुर जिले के आसपुर में 'द स्टडी सीनियर स्कूल' में 24 से 30 दिसंबर तक आयोजित हुआ। शिविर का संचालन वरिष्ठ स्वयंसेवक जोरावर सिंह भादला के निर्देशन में लक्ष्मी कंवर खारड़ा ने किया। उन्होंने प्रथम दिन बालिकाओं का स्वागत करते हुए कहा कि वर्तमान युग में पूरा संसार पश्चिम की लहर से प्रभावित हो रहा है। ऐसे में हम भी इस प्रभाव से अछूते नहीं है और इस प्रभाव से बचने के लिए हमें पूर्वजों के द्वारा समय-समय पर स्थापित किए गए मान बिंदुओं, अपनी संस्कृति और इतिहास का ज्ञान होना आवश्यक है। आज आधुनिकता की दौड़ में हम अपने मूल को भूलते जा रहे हैं। जो श्रेष्ठ है उसे हेय मान रहे हैं और निकृष्ट को श्रेष्ठ मान कर अपना रहे हैं। अतः इस प्रकार के दूषित वातावरण में हमारी जिम्मेदारी और भी अधिक बढ़ जाती है कि हम अपने कर्तव्य का पालन करें, अपनी मूल संस्कृति का अनुसरण करें और समाज तथा राष्ट्र में हमारे पुरखों के उन मान बिंदुओं को स्थापित करें, जिनका अनुसरण सारा संसार करता आया था। उन्होंने कहा कि श्री क्षत्रिय युवक संघ अपने शिविरों के माध्यम से हमें वह प्रशिक्षण प्रदान कर रहा है जिससे हम अपने कर्तव्य को पहचान कर उसका पालन करने में समर्थ बन सकें। आज हमें राम और सीता के आदर्श चरित्र का अनुकरण करने की आवश्यकता है और उसके लिए संघ तप और साधना के माध्यम से हमारे चरित्र को निखारने का अभ्यास करवा रहा है। यहां के प्रत्येक कार्यक्रम में चाहे वह प्रार्थना हो, योगासन और खेल हो, सहगीत और चर्चा हो, सभी में हमारे गौरवपूर्ण इतिहास, वर्तमान की चुनौतियों और भविष्य के निर्माण में हमारी भूमिका के संकेत विद्यमान है। उन्हें पहचानने का प्रयास करें और यहां के शिक्षण को अपने आचरण का अंग बनाएं। शिविर में बांसवाडा, उदयपुर, सलूम्बर, भीलवाडा, डूंगरपुर व चित्तौड़गढ़ जिलों के आसपुर, बनकोड़ा, फतेहपुरा, अमृतिया, कानपुरा, वलाई, नांदली, अहाड़ा, खुदरड़ा, वाडा कुण्डली, रामा, नादली सांगोरा, गेहूवाड़ा, तख्ता जी का तांडा, लाम्बापाड़ा आदि गांवों से 85 बालिकाओं ने प्रशिक्षण लिया।

जालौर में बालिका प्राथमिक प्रशिक्षण शिविर संपन्न

जालौर शहर में स्थित विद्या भारती स्कूल में चार दिवसीय बालिका प्राथमिक प्रशिक्षण शिविर 24 से 27 दिसंबर की अवधि में आयोजित हुआ। शिविर का संचालन वरिष्ठ स्वयंसेवक राम सिंह माडपुरा के निर्देशन में रश्मि कंवर देलदरी ने किया। उन्होंने बालिकाओं से कहा कि क्षत्रिय जाति के गौरवशाली इतिहास के निर्माण में नारी का भी उतना ही योगदान है जितना पुरुषों का। क्षत्रिय नारी ने त्याग, मयार्दा और बलिदान के अद्वितीय उदाहरण सामने रखे हैं और पुरुषों को उनके स्वधर्म पालन में पूरा सहयोग किया। यही कारण है कि राम से पहले सीता जी का नाम लिया जाता है। शक्ति के बिना शिव की उपासना भी अधूरी मानी जाती है। इसलिए नारी जाति का दायित्व बहुत बड़ा है जिसे हमें समझने और उसका पालन करने की आवश्यकता है। संघ अपने शिविरों के माध्यम से हमें यही सीखा रहा है। उन्होंने पूज्य श्री तनसिंह जी जन्म शताब्दी समारोह में शामिल होने के लिए अपने परिवार के सदस्यों सहित अधिकतम संख्या में दिल्ली पहुंचने का निवेदन भी किया। शिविर में जालौर, सिरोही, पाली और सांचौर जिलों की 290 बालिकाओं ने प्रशिक्षण प्राप्त किया।

हरीसिंह जाखली की धर्मपत्नी का देहावसान

श्रीमती मोहन कंवर

श्री क्षत्रिय युवक संघ के वरिष्ठ स्वयंसेवक हरी सिंह जाखली की धर्मपत्नी **श्रीमती मोहन कंवर** शेखावत का देहावसान 15 दिसंबर 2023 को 91 वर्ष की आयु में हो गया। पथप्रेरक परिवार दिवंगत आत्मा की शांति के लिए परमपिता परमेश्वर से प्रार्थना करता है और शोक संतप्त परिजनों के प्रति संवेदना व्यक्त करता है।

महावीर सिंह कानूता को पितृशोक

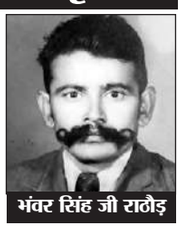

भंवर सिंह जी राठौड़

श्री क्षत्रिय युवक संघ के स्वयंसेवक महावीर सिंह कानूता के पिता **श्री भंवर सिंह जी राठौड़** का देहावसान 27 दिसंबर 2023 को हो गया। पथप्रेरक परिवार दिवंगत आत्मा की शांति के लिए परमपिता परमेश्वर से प्रार्थना करता है एवं शोक संतप्त परिजनों के प्रति संवेदना व्यक्त करता है।

सामाजिक कार्यकर्ता सवाई सिंह धमोरा का निधन

श्री सवाई सिंह धमोरा

वरिष्ठ सामाजिक कार्यकर्ता, इतिहासकार एवं श्री क्षत्रिय युवक संघ के अच्छे सहयोगी **श्री सवाई सिंह धमोरा** का देहावसान 24 दिसंबर 2023 को 98 वर्ष की आयु में हो गया। पथप्रेरक परिवार दिवंगत आत्मा की शांति के लिए परमपिता परमेश्वर से प्रार्थना करते हुए शोक संतप्त परिजनों के प्रति संवेदना व्यक्त करता है।

पूज्य तनसिंह जी की व्यथा और संकल्प का प्रकटीकरण है संघ : संघप्रमुख श्री

दिल्ली विश्वविद्यालय

बैंगलुरू

(पेज 2 से लगातार)

बालोतरा के कल्याणपुर में प्रांत स्तर पर स्थापना दिवस मनाया जिसमें संभाग प्रमुख मूल सिंह काठाड़ी, कल्याणपुर प्रधान उम्मेद सिंह अराबा, पूर्व प्रधान हरी सिंह उमरलाई आदि गणमान्य व्यक्ति उपस्थित रहे। भवानी क्षत्रिय बोर्डिंग हाउस चौहटन में भी कार्यक्रम हुआ जिसमें वरिष्ठ स्वयंसेवक कमल सिंह रानीगांव व अन्य सहयोगी उपस्थित रहे। सेड़वा (बाड़मेर) स्थित श्री जय भवानी राजपूत सेवा संस्थान में कार्यक्रम आयोजित हुआ। चुरू जिले में राजलदेसर स्थित विनायक होटल में भी स्थापना दिवस मनाया गया जिसमें वरिष्ठ स्वयंसेवक सुमेर सिंह गुड़ा ने संघ का परिचय दिया। राजपूत छात्रावास बालोतरा में आयोजित कार्यक्रम में जीवराज सिंह दाखा ने पूज्य तनसिंह जी व श्री क्षत्रिय युवक संघ का परिचय दिया। श्री राव बल्लूजी छात्रावास सांचौर में भी कार्यक्रम आयोजित हुआ जिसमें प्रांत प्रमुख महेंद्र सिंह कारोला, प्रेम सिंह अचलपुर व कल्याण सिंह बावरला ने संघ के बारे में अपनी बात रखी। बालोतरा संभाग के बेरानाडी ग्राम पंचायत के राजस्व गांव रेलों की ढ़ाणी स्थित जय भारती पब्लिक स्कूल में 17 दिसंबर को स्थापना दिवस के उपलक्ष्य में कार्यक्रम आयोजित हुआ जिसमें संभाग प्रमुख मुलसिंह काठाड़ी सहयोगियों सहित उपस्थित रहे। स्थापना दिवस की पूर्व संध्या पर मातेश्वरी शाखा भियाड़ में भी कार्यक्रम का आयोजन हुआ जिसमें शिव प्रांत प्रमुख राजेंद्र सिंह भियाड सहयोगियों सहित उपस्थित रहे। थराद तहसील के वलादर गांव में स्थित शिव मंदिर में भी कार्यक्रम आयोजित हुआ।

श्री जगदंबा छात्रावास केकड़ी में आयोजित कार्यक्रम में प्रांत प्रमुख विजयराज सिंह जालियां सहयोगियों सहित उपस्थित रहे। इस दौरान जन्म शताब्दी समारोह की तैयारियों हेतु कार्यालय का प्रारंभ भी किया गया। मां भगवती छात्रावास गढ़ सिवाना में भी कार्यक्रम हुआ जिसमें कमल सिंह गेंहू ने संघ व पूज्य श्री के बारे में बताया। संभाग प्रमुख मूल सिंह काठाड़ी सहयोगियों सहित उपस्थित रहे व जन्म शताब्दी समारोह का निमंत्रण दिया। वीरवर दुगार्दास राठौड़ राजपूत सभा भवन डीडवाना में साधना संगम संस्थान के तत्वावधान में स्थापना दिवस मनाया गया जिसमें वरिष्ठ स्वयंसेवक डूंगर सिंह किरडोली व बजरंग सिंह सेवा सहयोगियों सहित उपस्थित रहे। जयसिंह सागु ने संघ व तनसिंह जी का परिचय दिया। उदयपुर में बीएन विश्वविद्यालय में कार्यक्रम हुआ जिसमें वरिष्ठ स्वयंसेवक भवानी सिंह मुंगेरिया व संभाग प्रमुख भंवर सिंह बेमला सहयोगियों सहित उपस्थित रहे। इनके अलावा तेजावास रानीवाड़ा (जालोर), आकोडा (बालक व बालिका शाखा), श्री लक्ष्मण राजपूत छात्रावास डूँगरपुर, नगवाड़ा खुर्द (मकराना), छोटी रानी, पाली शहर, उन्दरा (सिरोही), कसूम्बी (लाडनूं), ओसियां, बाली, रायपुर, खिंदारागांव सहित अनेक स्थानों पर भी संघ का स्थापना दिवस मनाया गया। सिरोही के राव सुरतान शिक्षण संस्थान में भी कार्यक्रम आयोजित हुआ। हरियाणा के हिसार में भी स्थापना दिवस मनाया गया। गुड़ामालानी प्रांत में बूल एवं आईदानपुरा मीठड़ा में शाखा स्तर पर स्थापना दिवस मनाया गया।

स्थापना दिवस के अवसर पर पूज्य श्री तनसिंह जन्म शताब्दी वर्ष के निमित्त गुजरात के गोहिलवाड़ संभाग में स्थित राणपुर राणोजी गढ में मातृशक्ति द्वारा 100 कुंडीय यज्ञ का आयोजन करके जन्म शताब्दी समारोह हेतु प्रार्थना की गई। 24 दिसंबर को नवी मुंबई (खारघर) में स्थापना दिवस के उपलक्ष्य में कार्यक्रम आयोजित हुआ जिसमें वरिष्ठ स्वयंसेवक भवानी सिंह मुंगेरिया ने कहा कि मुंबई जैसी व्यस्ततम नगरी में इस तरह के कार्यक्रम आपके प्रबल सामाजिक भाव के परिचायक और सभी के लिए प्रेरणादायी है। पवन सिंह बिखरनिया ने पूज्य श्री तनसिंह जी और संघ का परिचय दिया। संभाग प्रमुख नीर सिंह सिंघाना सहयोगियों सहित उपस्थित रहे। प्रांत प्रमुख रणजीत सिंह आलासन ने कार्यक्रम का संचालन किया। कार्यक्रम के दौरान सामाजिक कार्यकर्ता सुखदेव सिंह गोगामेड़ी को श्रद्धांजलि भी दी गई। गणपत सिंह, वेरियाल सिंह, ईश्वर सिंह, श्रवण सिंह डाभड़ ने व्यवस्था में सहयोग किया। हैदराबाद के प्रगति महाविद्यालय, हनुमान टेकडी में भी स्थापना दिवस मनाया गया। कार्यक्रम का संचालन गोपाल सिंह भियाड़ व गोपाल सिंह चारणीम ने किया। गोशामहल के पूर्व विधायक प्रेमसिंह राठौड़, रामसिंह चारणीम, कालु सिंह सुराणा, शेरसिंह सेनपुरा आदि ने अपने विचार रखे। रतनसिंह खुडानिया ने सभी को जन्म शताब्दी समारोह का निमंत्रण दिया। बेंगलुरु में राणा सिंह पेट स्थित चामुंडा माता मंदिर में भी 24 दिसंबर को हाड़ी रानी शाखा एवं प्रताप शाखा द्वारा संयुक्त रूप से स्थापना दिवस मनाया गया। रिंकू कंवर धाणसा ने कार्यक्रम का संचालन किया। थराद (गुजरात) में भी कार्यक्रम हुआ जिसमें गुमान सिंह माड़का, भगवान सिंह वलादर, सिद्धराज सिंह पीलुडा ने अपने विचार रखे। रामसण (डीसा) में भी कार्यक्रम हुआ जिसमें अजीत सिंह कुणघेर सहयोगियों सहित उपस्थित रहे। गिड़ा (बायतु प्रांत) में भी स्थापना दिवस मनाया गया जिसमें संभाग प्रमुख मूल सिंह काठाड़ी सहयोगियों सहित उपस्थित रहे। नोहर स्थित करणी माता मंदिर में भी कार्यक्रम आयोजित हुआ।

मुम्बई

(पृष्ठ तीन का शेष)

पूज्य श्री की...

आसींद से यह यात्रा अंटाली, गुलाबपुरा चौराहा होते हुए विजयनगर पहुंची जहां एक सभा का आयोजन किया गया। यहां से संदेश यात्रा साथाना चौराहा, सिंगावल चौराहा, बादनवाडा चौराहा, भिनाय होते हुए सोल खुर्द पहुंची जहां स्थानीय बालिकाओं एवं महिलाओं ने यात्रा का तिलक एवं पुष्पांजलि से स्वागत किया। यहां से नागोला, कनई कला, कनई खुर्द, जालियां, बिलियां, रामपाली और डोराई होते हुए केकड़ी पहुंची जहां जगदंबा राजपूत छात्रावास में सभा का आयोजन हुआ। इसके बाद कोहड़ा, पारा, गुलगांव, सावर होते हुए यात्रा देवली पहुंची जहां बैठक आयोजित करके समाज बंधुओ को जन्मशताब्दी समारोह का निमंत्रण दिया गया। यहां से रवाना होकर संदेश यात्रा हिंडोली होते हुए बूंदी पहुंची जहां रात्रि विश्राम किया गया। 28 दिसंबर की सुबह संदेश यात्रा कोटा स्थित शेखावाटी भोजनालय के सामने से रवाना हुई। यहां से यात्रा का काफिला शिवपुरा चौराहा पहुंचा जहां डेयरी चेयरमैन और भूमि विकास बैंक के अध्यक्ष चैन सिंह राठौड़ और अन्य समाजबंधुओ द्वारा यात्रा का स्वागत किया गया। यहां से रंगबाड़ी, कंसुआ चौराहा और छावनी होते हुए यात्रा सूरजपोल स्थित महाराव भीम सिंह राजपूत छात्रावास पहुंची, जहां आयोजित सभा में शहर में रहने वाले समाजबंधु सम्मिलित हुए। छात्रावास समिति के पदाधिकारी और छात्रावास के विद्यार्थी भी मौजूद रहे। यहां से आगे यात्रा शहीद स्मारक एवं कुन्हाड़ी प्रताप चौराहा पर पहुंची। इसके बाद यात्रा केशोरायपाटन, कापरेन मेन रोड, आजंदा मोड़, दईखड़ा, लाखेरी बाईपास, इंद्रगढ़ टोल नाका होते हुए पीपलवाड़ा पहुंची। सभी स्थानों पर समाजबंधुओ द्वारा पुष्प वर्षा के साथ यात्रा का स्वागत किया गया। यहां से कुस्तला होते हुए यात्रा सवाई माधोपुर पहुंची जहां फतेह पब्लिक स्कूल में सभा का आयोजन हुआ।

दिल्ली, उत्तरप्रदेश, हरियाणा और पूर्वी राजस्थान में किया गहन संपर्क

पूज्य श्री तनसिंह जी जन्म शताब्दी समारोह के प्रचार-प्रसार हेतु स्वयंसेवकों द्वारा अनेक दल बनाकर दिल्ली, उत्तरप्रदेश, हरियाणा एवं पूर्वी राजस्थान के विभिन्न क्षेत्रों में गहन संपर्क अभियान चलाया गया जिसमें गांव-गांव जाकर समाजबंधुओ के साथ बैठकें की गई एवं उन्हें पूज्य तनसिंह जी एवं श्री क्षत्रिय युवक संघ का परिचय देकर 28 जनवरी 2024 को दिल्ली के जवाहरलाल नेहरू स्टेडियम में आयोजित होने वाले जन्म शताब्दी समारोह में पहुंचने का निमंत्रण दिया। उत्तर प्रदेश के सहारनपुर क्षेत्र में चंद्रवीर सिंह देणोक एवं लूणकरण सिंह तेना के दल द्वारा 15 से 19 दिसंबर तक संपर्क किया गया। इस दौरान क्षेत्र के मुसैल, जीवाला, बरौली, खजुरवाला, रणखण्डी, महेशपुर, शिमलाना, दलहेड़ी, मिजार्पुर, अंबेहटा, चंदेनामाल, कैरू, गोगवान जलालपुर, हरर्ड फतेहपुर, उमरपुर, जजनेर आदि गांवों में संपर्क किया गया। भारतीय किसान मजदूर संगठन के राष्ट्रीय अध्यक्ष ठाकुर पुरण सिंह व अन्य सहयोगी साथ रहे। 16 से 19 दिसंबर तक संघ के केंद्रीय कार्यकारी प्रेम सिंह रणधा, दिग्विजय सिंह लांबापारडा, हनुमंत सिंह सज्जन सिंह का गड़ा एवं दिव्यराज सिंह वालाई के दल ने हरियाणा के भिवानी, चरखी दादरी व रोहतक क्षेत्र में संपर्क किया। इस दौरान सुंगरपुर, दुलहेडी, रिवासा, धानी माहु, बजिना, दिनोद, कुहाड़, फूलपुरा, खरक कलाँ, सिरसा घोघड़ा, लोहारी जाटू, दांग खुर्द, रामुपुरा, समर गोपालपुर, बौंद, रानीला, पिलाना, साकरोड़, कलिंगा, सैये, रीवाड़ी खेड़ा, चांग सहित अनेक गांवों में समाजबंधुओं के साथ बैठकें कर जन्म शताब्दी समारोह का निमंत्रण दिया गया। हरियाणा के महेन्द्रगढ़ में वरिष्ठ स्वयंसेवक गणपतसिंह अवाय, भंवरसिंह बेमला, फतहसिंह भटवाड़ा, वदनसिंह गेंहुवाडा के दल ने संपर्क किया। यहां देवराली, जवाहर नगर, डिगरोला, नावा, सोहडी, श्यामपुरा, जडवा, ढाणा, नंगला, सोहासरा,

खेड़ी तलवाना, बसई, गिगलाणा, खुंदरोठ, धौली, जांट, भुरजट, आदलपुर, बास खुडाना, खुडाना, पाली, सतनाली, निम्बी, निंबेडा आदि गांवों में संपर्क किया गया। वहीं झज्जर, रेवाड़ी, नूंह और गुड़गांव में विजयराजसिंह जालिया, भगवान सिंह देवगांव, बलवीरसिंह पिपलाज, किशनसिंह बिलिया के दल ने संपर्क किया। इस दल ने गोपालपुर, हरसरू, बड़ागांव, द्वाना, चिराड़ा, बावल, लालपुर गांवों में संपर्क कर जन्म शताब्दी समारोह का निमंत्रण दिया। 16, 17 व 18 दिसंबर को श्याम सिंह चिरनोटिया, भगवत सिंह सिंघाना, नारायण सिंह पांडुराई व रेवत सिंह धीरा के दल ने फरीदाबाद, पलवल व सीकरी क्षेत्र के राजपुर खादर, शोपुर, शेखपुर खादर, सोलडा, बागपुर, सोलडा आदि गांवों में संपर्क किया गया। पूर्वी राजस्थान में अलवर जिले एवं निकटवर्ती क्षेत्रों में गजराज सिंह पीपली, दिनेश सिंह पीपली, मनोज सिंह पीपली, ओंकार सिंह पांचोटा व प्रताप सिंह सांगाना ने संपर्क किया। इस दौरान मिजार्पुर, सिहाली, बींजवाड चौहान फोर्ट, हुलमाणा कला, गादुवास, खेड़ा, तिगांवा, नांगल सालियां, विजय नगर, ढिकवाड, बसई भोपाल सिंह, घिलोट, नंगली, बलाहिर, दौसौद, खोहर, बसई, तसिंग, छापुर, पदमाडा कल्ला, बर्डोद, कोलीला, झझारपुर, शामदा, हांसपुर, खैरथल, पेहल, बड़ली, ततरापुर, जीवन सिंह पुरा आदि गांवों में संपर्क कर निमंत्रण दिया गया।

संपर्क के दूसरे चरण में 23, 24 व 25 दिसंबर को प्रेम सिंह रणधा, भूपेंद्र सिंह गरणिया, नारायण सिंह पांडुराई व ओंकार सिंह पांचोटा के दल ने हरियाणा के खादर, पलवल, वल्लभनगर, सोहना, फरीदाबाद आदि क्षेत्रों में गहन संपर्क किया जिसमें डुंडसा, पयाला वल्लभगढ़, प्रहलाद पुर, लढौली, बहवलपुर, सौतेई, शाहापुर कला, सुनपेड, कौराली, चांदपुर, फैजपुर, साहुपुरा खादर, लोहसिंघानी, घामडोज, दौहला, राघव वाटिका में पहुंचकर जन्म शताब्दी समारोह का निमंत्रण दिया गया। भरतपाल सिंह दासपां, पवन सिंह बुटाटी व डॉ. तेजपाल सिंह चुंडावत के दल ने दिल्ली शहर में 24 व 25 दिसंबर को घर-घर जाकर संपर्क किया और द्वारका, विकासपुरी, पश्चिमी दिल्ली क्षेत्र में रहने वाले समाजबंधुओं से जन्म शताब्दी समारोह में पहुंचने का निवेदन किया। 22 से 25 दिसंबर तक गणपत सिंह अवाय, नेपाल सिंह गोला व गंगा सिंह बेरसियाला के दल ने उत्तर प्रदेश के मुजफ्फरपुर, मेरठ और बागपत क्षेत्र में संपर्क किया। अटेरना, कपसाड, सलावा, राधैना, आँखयेपुर, भमोरीया, पाली, कालन्दी, मुलहेड़ा, पारसी, कुराल्सी, सरोरा, चाठा चौरासी, धौलाना, कन्दोला, खेड़ा, अचेप्लगढ़ी, धामपुर आदि गांवों में बैठकें आयोजित हुई। 23 से 25 दिसंबर तक हरियाणा में अरविंद सिंह बालवा व सहयोगियों ने फतेहाबाद क्षेत्र के भट्ठू, मेहुवाला, ढिंगसरा, किरढाण, सिरसा क्षेत्र के गदली राजपुताना,

रंधावा, राजपूत सभा सिरसा, बाजेकां एवं हिसार क्षेत्र के श्यामसुख, नंगथला, सिन्डोल गांवों में संपर्क किया।

26 दिसंबर को दिल्ली के बेगमपुर में संपर्क किया गया। उत्तरप्रदेश में बागपत क्षेत्र के डोला, मितली, गौरीपुर गांवों में और खट्टा (प्रह्लादपुर) में भी संपर्क किया गया। 27 दिसंबर को लघु मेवाड़ के नाम से जाने जाने वाले उत्तर प्रदेश के साठा चौरासी क्षेत्र के सपनावत, मथरावली, सज्जूपूरा, जारचा और कलौंदा गांव में संपर्क किया गया। उत्तरप्रदेश में बकौरा, जहांगीराबाद, पाली और सिसाना गांव में भी संपर्क किया गया।

श्री संघशक्ति प्रकाशन प्रन्यास (मालिक) के लिए मुद्रक व प्रकाशक लक्ष्मणसिंह द्वारा गजेंद्र प्रिन्टर्स, सांगों का रास्ता, किशनपोल बाजार, जयपुर-302003 (दूरभाष 2313462) से मुद्रित एवं ए/8, तारानगर, झोटवाड़ा, जयपुर- 302012 **(दूरभाष: 2466353 व 2466387)** से प्रकाशित। सम्पादक- लक्ष्मणसिंह। Email:- pathprerak1997@gmail.com, Web site:- www.shrikys.org